नविन नंदिस्वर महोत्सव.

रची प्रसिद्ध करनार.

केशवलाल वि. शिवराम.

अमदावाद.



माणेकचोक आगळ कागदीओळनी सामे

शा. हिराभाइ पुंजासाना मकानमां

“अमदावाद टाइम्स प्रेसमां”

काळीदास सांकळचंदे छाप्यो:

संवत [illegible] सने १८७६.

कीमत छाठ आना.

नवीन नंदिस्वर महोत्सव.

मंगलाचर्ण.



दुहा.

श्री संखेश्वर समरीए ॥ सुरपति सारे सेव ॥ कुशल करण तारण तरण ॥ देव देवनों देव ॥ १ ॥

हरी हरकत हरी तन तणी ॥ हरीहर गुण गण गाय ॥ हरी नवकारे हरी करयो ॥ हरी लंबन प्रभु पाय ॥ २ ॥

तस पद पंकज प्रणमतां ॥ सघलां वि घन विनास ॥ मन ईछीत सुख संपजे ॥

अंग वधे उल्लास ॥३॥

वाणी जाणी तम तणो ॥ शिव सुत से
चक सार ॥ सरस वचन मति सरस द्यो
॥ जस जगमां विस्तार ॥४॥

जीनवर गुण गाशुं अमे ॥ गुरु उद्योत
पसाय ॥ दुख दोहग दुरज टळे ॥ सुण
वाथी सुख थाय ॥ ॥५॥

ढाळ १ ली.

जगत गुरु जीनवर जयकारी ॥ ए देशी॥

श्रोता गुणी गुणने श्रवण करीए ॥
जेना थकी भवजलधी तरीए ॥ श्रोता०
॥ ए आंकणी ॥

जंबुमां भरत भलु भणीए ॥ गुर्जर देशे

राजनगर गणीए ॥ शोभा तेह स्हेर तणी सुणीए ॥ श्रोता० ॥ ॥१॥

जीनेश्वर मंदीर जयकारी ॥ शोभे एक शत अध निरधारी ॥ नमे तिहां नित्य नित्य नर नारी ॥श्रोता० ॥२॥

घणा वसे साधुजी गुणवंता ॥ सिधांत सागर अवगाहंता ॥ करम दल कापवा बलवंता ॥ श्रोता० ॥३॥

साधवीउ संजममां सारी ॥ गुरुणी हुकम सीर धरनारी ॥ वसे रुमी शिल कवच धारी ॥ श्रोता० ॥४॥

श्रावक धनवंता तिहां वशिया ॥ गुरु गुण गण मनमां गसिया ॥ रुमा जीन

सासनना रसिया ॥ श्रोता० ॥ ५ ॥

उत्तम कुलने उत्तम जात ॥ लघु श्री
माली तणी नात्य ॥ विलायते नाम छे
विख्यात ॥ श्रोता० ॥ ६ ॥

नामांकीत नात्य तणा शेठ ॥ भला
भला करता भली भेठ ॥ एना आगल
सघला हेठ ॥ श्रोता० ॥ ७ ॥

कमा प्रेमचंद कुले राया ॥ जोइती
बाई माता तणा जाया ॥ मगनभाइ कुल
दीपक भाया ॥ श्रोता० ॥ ८ ॥

अरी आवी चरणे मुगट नाम्या ॥
जगतमां तस जस बहु जाम्या ॥ बिरुद
रावबाहादुरनुं पाम्या ॥ श्रोता० ॥ ९ ॥

कंन्याशालाउ करी सारी ॥ के राव
बाहादुर तणी बलीहारी ॥ निति सिखे
नानकमी नारी ॥ श्रोता० ॥१०॥

जिरण जिन चैत्यने समराव्यां ॥ नवि
न जीन मंदीर विरचाव्यां ॥ गुरु योग्य
स्थानक निपजाव्यां ॥ श्रोता० ॥११॥

के साधरमीना सुख माटे ॥ करी धर्म
शाला तिरथ वाटे ॥ जाचकने दे दुध
जल साटे ॥ श्रोता० ॥१२॥

के शेठजी दान विशे दाता ॥ तस गु
ण भुतल पंकाता ॥ जेनी कविजन किर्त्ति
गाता ॥ श्रोता० ॥१३॥

सिद्धाचल संघ लेइनें गया ॥ पुजी

गीरनार पवित्र थया ॥ सेठजीना गुण न
जाय कह्या ॥ श्रोता० ॥१४॥

के हाकम हिंदुस्तान तणी॥ के विकटो
रीया इंग्लंन्ड धणी ॥ के शेठ कीरति सुणी
हरखी घणी ॥ श्रोता० ॥१५॥

के उद्योतविजय पसाय करी ॥ के
शिव सुत केशव हर्ष धरी ॥ के प्रथम ढा
ल मुखथी उचरी ॥ श्रोता० ॥१६॥

दुहा.

लक्षमी खरचि लक्षधा ॥ कर्यां पुन्य
नां काम ॥ अमर थयुं अवनि विशे ॥
मगनभाइनुं नाम ॥१॥

करमचंद जस तात जे ॥ सिद्धाचल

गीरी सार ॥ वर घर जिनवरनुं करयुं ॥
पाम्या पुन्य अपार ॥२॥

तस सुत त्रिभुवन पति तणां ॥ राजन
गरमां सार ॥ शोभित सदन करे भलां ॥
अमर भुवन आकार ॥३॥

तेह तणा गुण गाइवा ॥ उलट्यो हर्ष
विशेष ॥ तेथी हुं कविता करुं ॥ सुणजो
तजी क्लेश. ॥४॥

ढाल २ जी.

सुण शेठ कहुं अवदातरे ॥ तुमे दान
गुणे विख्यातरे ॥ भाग्य दीशा फलीरे ॥
ए देशी ॥

घणी शोभे घीकांटा अगाभीरे ॥ वमी

मगनभाइ तणी वाडीरे ॥ पुन्य प्रगट फ
ल्युंरे. ॥ ए टेक ॥

देखी रुदय थयो मने रागरे ॥ आवे
सुमंन सुगंध सुहागरे ॥ पुन्य० ॥१॥

चंपो दावदी दमण चंबेलीरे ॥ निरखी
नौतम नागर बेलीरे ॥ पुन्य० मरुवो मोघ
रो मालति महेकेरे ॥ लिंबुडीए मोटां लिं
बु लेहेंकेरे ॥ पुन्य० ॥२॥

शिताफल सहकारनी शाखरे ॥ मीठी
मांडवा उपर द्राखरे॥ पुन्य० केत्तकी कद
ली ने अखोडरे ॥ बहु शोभे गुलाबना छो
डरे ॥ पुन्य० ॥३॥

दिठां मीठां दाडम त्यां बेदाणारे॥ विवि

न ते वृक्ष रोपाणांरे ॥ पुन्य० फल फुल विविध प्रकाररेरे ॥ बीजा बाग एना थकी हाररेरे ॥ पुन्य० ॥४॥

घाम्री रक्षक बोड सुधाररेरे ॥ उछले ज ल उंचु फुंवाररेरे ॥ पुन्य० शुक मेना वाणी मुख मीठीरे ॥ क्रिडा करती कोकिल ज्यां बे दीठीरे ॥ पुन्य० ॥५॥

हंस सारस मोर चकोररे ॥ चकवा चकवी करे सोररे ॥ पुन्य० बेश बेठको बागे बनावीरे ॥ खाशी खुरशी खुब मु कावीरे ॥ पुन्य० ॥६॥

दरवाजानो बंगलो दिपेरे ॥ जाणुं रा जभुवनने ए जीपेरे ॥ पुन्य० त्यां तो शेठ

रना श्रावक आवेरे ॥ नवकारशी नेहे ज

मावेरे ॥ पुन्य० ॥७॥

शेवजी मन स्नेह धरीनेरे ॥ तेह वा

मीमां चैत्य करीनेरे ॥ पुन्य० सत उगणी

सातनी शालरे ॥ देहरें पधरावे परम द

यालरे ॥ पुन्य० ॥८॥

मुलनायक पद्म प्रभुजीरे ॥ आपो शि

व सुख चरण नमुजीरे ॥ पुन्य० गुरु उ

द्योतविजय पसायरे ॥ गुण शिव सुत के

शव गायरे ॥ पुन्य० ॥९॥

दुहा.

लघु वय मोतीभाइ छे ॥ मगभाइना

भ्रात ॥ तस नामे जीन घर कर्युं ॥ वडु

एहूनी वात. ॥८॥

ढाल ३ जी.

मोहनजीए मोकल्युंरे मोसाळुं ॥ए देशी॥

सकल जन सांभळो सुखकारी ॥ अष्टापद रचना मनोहारी ॥ सकल जन सांभळो सुखकारी ॥ ॥ ए आंकणी ॥

मोटुं मंदीर शास्त्रानुं सार ॥ उंची जगतनी जुगती अपार ॥ मजबुत मोटा स्थंभ मुक्या ॥ शिल्प शास्त्र विधी नथी चुक्या ॥ सकल० ॥१॥

मोटा घुंमट गोल आकार ॥ लघु चार तरफ दीसे चार ॥ घुमट गभारामां बनावी ॥ ते उपर सामरण तो रचावी ॥

सकल० ॥ २॥

सामरणनी शोभा शी वखाणुं ॥ एक त
रफना कलस एकाणुं ॥ तीहां ठीक ठरा
वियो ठाव ॥ सिंह कलस करया आव
आव ॥ सकल० ॥ ३॥

सर्व वर्णसें वनुं कराव्या ॥ चार बा
जुए कलस मुकाव्या ॥ नाना विध तणी
रचना निहालो ॥ रंग मंडप रुडो रुपा
लो ॥ सकल० ॥ ४॥

कोरी पाशाण पुतली करीयो ॥ स्थं
भे रंभा सरीखी ते धरीयो ॥ मानुं छपन
दिग कुमरीयो ॥ प्रभु ओछव करवा उत
रीयो ॥ सकल० ॥ ५॥

कोइ ताल तंबुरा बजावे ॥ हाव भाव कटाक्ष बतावे ॥ भला भींते तीरथ त्यां चीतरीयां ॥ मांही काम कनक तणां करीयां ॥ सकल० ॥६॥

सरिता शैल वनसर सोहे ॥ पींछी पेखीने महिपती मोहे ॥ जीन चैत्य चीतरीयां आणंदे ॥ सउ श्रावक स्नेहथी वंदे ॥ सकल० ॥७॥

बीजां चीत्र विचीत्रज चलके ॥ आआं झमरुख झलहल झलके ॥ आवे चीत्रामण नही आंच ॥ मेनाकारी करी जमदा काच ॥ सकल ॥८॥

मोटा तकता दीधा मांहीं मांनी ॥ ल

टकावी लीली पीली हांमी ॥ मुन मनह
रनो नहीं पार ॥ रवी तेज पामे तेथी
हार ॥ सकल० ॥९॥

शेत्रुंजी आरसनी अनुर ॥ भाली मोह
पामे भम भुप ॥ नंदावर्तनें स्वस्तिक नि
रख्यां ॥ बुटा वेल बराबर परख्या ॥
सकल० ॥१०॥

बाट मांहीं सोनेरी पुतलीयो ॥ जा
णे अपसरा आवीने मलीयो ॥ गोख आ
गल त्रण मुकाये ॥ दरवाजे कबान क
रावे ॥ सकल० ॥११॥

एनी शोभा जोइ तजी हुंश ॥ गगने
गयुं इंद्र धनुश ॥ देव दरवाजे चोकी क

रे बे ॥ सउ संघनां वीघन हूरे बे ॥ स
कल० ॥१२॥

झीणा काच जमत्या जाणें तारा ॥
दीशा चार बे चार गभारा ॥ देरासरनी
शोभानो न पार ॥ दोय द्धारे दीठा चोव
दार ॥ सकल० ॥१३

जोइ जीनवर मंदीर घाट ॥ आणे
अमर विमान उचाट ॥ मन धारी मारी
शोभा फोक ॥ लाजी ए वशीयुं देवलो
क ॥ सकल० ॥१४॥

आवे पार नहीं शोभा गणतां ॥ ब्रह्मा
सरखा थाके मुख भणतां ॥ गुरु उद्योत
विजय पसाय ॥ शोभा शिव सुत केशव

गाय ॥ सकल० ॥१५॥

दुहो.

जीन मंदिर सुंदर कर्युं ॥ प्रभु पधरा
वें सार ॥ ते संक्षेपे वरणवुं ॥ वरते जय
जयकार ॥ ॥१॥

ढाळ ४ थी.

दुनीयामां देव न दुजाजी ॥ जीनव
र जयकारी ॥ ॥ए देशी ॥

एवुं देहेरुं कर्युं मनोहारजी ॥ सास
य सुख लेवा ॥ ॥ ए आंकणी

विधी साचवी सर्व प्रकारजी सा० सत
ओगणी बारनी सालजी ॥ सा० मास वै
शाखमां घरी वहालजी ॥सा० ॥ १ ॥

शुभ महुरत बे मन रंगेजी ॥ सा० ॥
अखात्रीजने दीन उमंगेजी ॥ सा० ॥ प्र
भु पुंखीने हरकोर वहुजी ॥ सा० ॥ दा
न दे बे जाचकने बहुजी ॥ सा० ॥२॥

गादी पधराव्या प्रभु गुण रासजी ॥
सा० ॥ आखा नगरमां सउने उल्लासजी
॥ सा० ॥ चार आठ अने दश दोयजी
॥ सा० ॥ शोभे चोबिस जीन गादी सो
यजी ॥ सासय सुख लेवा ॥ ३ ॥

विर रीखभ जीणंद सुखकारीजी ॥
सा० ॥जुउ मुल घभारे धारीजी ॥ सा०
कर जोमीने अरीहानी आगेजी ॥ सा०
शिवसुंदरी मुख थकी मागेजी॥सा० ॥४॥

मगनभाइनी भगनी सारीजी ॥ सा० ॥ सरधा जीन धर्मनी धारीजी ॥ सा० ॥ मुळीबाइ जे धर्मनुं मुळजी ॥ सा० ॥ करयु श्रावक ससरानुं कुळजी ॥ सा० ॥५॥

भाइ कृत्य देखी हरखाइजी ॥सा०॥ शोवे सर्वज्ञ पद सुख दाइजी ॥ सा० ॥ तस स्वामी जे त्रीकमदासजी ॥ सा० ॥ पुजे परम प्रभु गुण रासजी ॥ सा० ॥६॥

भणी विद्या विवेक वधारयोजी ॥ सा० ॥ तेथी मीथ्यात महीपती मारयोजी ॥ सा० ॥ श्रुत सांभळ्यां लावीने लक्षजी ॥ सा० ॥ तेथी पकड्यो अध्यातम पक्षजी ॥ सा० ॥७॥

तेना पुन्य निधान जे पुत्रजी ॥ सा० ॥
जेथी सोभे सारु घर सुत्रजी ॥ सा० ॥ मा
मानुं छे मुशाळमां मानजी ॥ सा० ॥ भा
णाभाइ युवराज समानजी ॥ सा० ॥८॥
मगनभाइ तणी पटराणीजी ॥ सा० ॥
तस समरथ पुत्री छे शाणीजी ॥ सा० ॥ घ
णी समजु अने गुण खाणीजी ॥ सा० ॥ दा
ता करण समी ए कहाणीजी ॥ सा० ॥९॥
मोतीभाइनी वधु हरखाणीजी ॥ सा० ॥
बोले सउ शणगार शेवाणीजी ॥ सा० ॥
तस पुत्री छे पुन्य निधानजी ॥ सा० ॥
रुपवंत अनें गुणवानजी ॥ सा० ॥१०॥
नामे चंचळ अचंचळ मनजी ॥ सा० ॥

पिता कुळमां पाकी ते रतनजी ॥ सा० ॥
रावबाहादुरनी बिजी व्हेनजी॥ सा० ॥ ज्ञा
न गुणमां करे नीत्य चेनजी ॥ सा० ॥११॥
जयकुंवरबा शास्त्रनां जाणजी ॥ सा. ॥
करे पंडीत कविनि पीछानजी ॥ सा० ॥
दातारने दीलनां उदारजी ॥ सा० ॥ वं
डां विद्वान ने हुशीयारजी ॥ सा० ॥१२॥
कमी नम्रता रुदय वरी छेजी ॥ सा० ॥
दया दिलमां अतिशे भरी छेजी ॥ सा० ॥
बुद्धिवंत जयकोरबानी बेटीजी ॥ सा० ॥
पुतळीबाइ छे गुण पेटीजी ॥ सा० ॥१३॥
समरथ चंचळ पुतळी मीतेजी ॥ सा. ॥
गावे जीनवर गुण थीर चीतेजी ॥ सा०

गंगा जमना अने सरस्वतीजी ॥ सा० नि
र्मळ त्रणे तणी तेवी मतीजी ॥सा० ॥ १४॥

त्रणे व्हेनो बनी अलबेलीजी ॥सा०॥
वनी विवेकी विद्यामी वेलीजी ॥ सा० ॥
भली भामनी सर्व भणेलीजी ॥ सा० ॥
रमे जीन गुण रास रसीलीजी ॥सा.॥ १५॥

विधि साचवी शेठजीए सर्वजी॥सा०॥
गुणवंत धरे नव गर्वजी ॥सा.॥ गुरु उद्योत
विजय पसायजी ॥ सा. ॥ गुण शिव सुत
केशव गायजी ॥सा. ॥ १६ ॥

दुहा.

संसारी सुख भोगव्यां ॥ मगनभाइ म
न रंग ॥ पर उपकार करया घणा ॥

उलट आणी अंग ॥ ॥ १ ॥

कार्णे शुभ करवा थकी ॥ बांधी पु
न्य अपार ॥ सास्वति प्रतिमा पुजवा ॥
सर्ग शिधाव्या सार ॥ २ ॥

मगनभाइ तणी लक्षमिनो ॥ माल
क करयो महंत ॥ समरथ सुत सुलक्ष
णो ॥ जेगभाइ जसवंत ॥ ३ ॥

अल्पायुमां एहने ॥ करी शुभ कर
णि सार ॥ ए पण अमरपुरी गयो ॥
गुण गणनो भंडार ॥ ४ ॥

तस तखते तेजस्वी जे ॥ चंचल
सुत चातुर ॥ विद्या वेल विराजीया ॥
शुभ करवामां सुर ॥ ५ ॥

रति पति सम रुपमां ॥ श्री साराभा
इ शेठ ॥ शास्त्र सकलमां कुशल छे ॥
ए आगल सहु हेठ ॥ ६ ॥

नंदिस्वर मंदिर करयु ॥ मगनभाइ
ने नाम ॥ श्रोता तस शोभा सुणो ॥
अति थयुं अभिराम ॥ ७ ॥

ढाल ५ मी.

मारा वाल्हाजी हो ॥ हुंरे आवी छुं
मही वेचवारे लोल ॥ ए देशी ॥

देव विमान सम दीपतोरे लोल ॥ न
विन नंदिस्वर द्वीप ॥ मारा वाल्हाजी हो
॥ अष्टापद नंदिस्वरुरे लोल ॥ एक एक
जी छे समीप ॥ मा० धन धन धन ज्ञी

न धर्मनेरे लोल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

मुख मंडपे मन मोही रह्युं रे लोल ॥
घुमट गोल करया चार ॥ मा० मुगती
वधु वरवा भणी रे लोल ॥ स्वयंवरा
मंडप सार ॥ मा० धन० ॥ २ ॥

स्थंभथी अचंभ उर उपजेरे लोल ॥
कोरणीनुं कर्युं काम ॥ मा० देव अंग
ना सम दिपतिरे लोल ॥ पुतलियो अ
ति अभिराम ॥ मा० धन० ॥ ३ ॥

शिव सुंदरी सखीयो सहिरे लोल ॥
आवी उभी उजमाल ॥ मा० मानु भवी
ने भावथीरे लोल ॥ आरोपवा वरमा
ल ॥ मा० धन० ॥ ४ ॥

जाळी छजां मुक्यां छाजतांरे लोल ॥ मंडप बीजा मनोहार ॥ मा० ऊंची अगाशी ओपतीरे लोल ॥ शिखर करयुं बे शीकार ॥मा० धन० ॥ ५ ॥

अंजनगिरी अंजन समारें लोल ॥ स्याम रत्न सरीखा सुहाय ॥ मा० ॥ चार दिशाए चार बेरे लोल ॥ आपुं शी उपमा य ॥ मा० ॥ धन० ॥ ६ ॥ स्फटीक रत्न सम शोभतारे लोल ॥ दधि वर्णा दधिमुख ॥ मा० ॥ सर्व मळीने सोळ बेरे लोल ॥ चार चार पुर्व प्रमुख ॥ मा० ॥ धन० ॥ ७ ॥ रक्त रत्न सम रळीयामणारे लोल ॥ रतिकर बे आव आव ॥ मा०

वार दिशाए चोगणारे लोल ॥ बत्रीसनो बन्यो वाग ॥ मा० ॥ धन० ८ ॥ जंबु मेरु करयो मध्यमारे लोल ॥ कंचन सर खी कांति ॥ मा० ॥ त्रेपन गिरी गुण गा वतारे लोल ॥ भागे भव तणी भ्रांति ॥ मा० ॥ धन० ॥ ए ॥ मामा मगनभाइ शेठ नारे लोल ॥ दलपत नामनो गोख ॥ मा० ॥ शेठ फइ सुत ठाकरशीनोरे लोल ॥ गोख प्रभु तणो करयो मोख ॥ मा० ॥ धन० ॥ १० ॥ गिरी उपर करया कोम थीरे लोल ॥ देव वंदा सुप्रधान ॥ मा० जुगल जिनवर घर जाणीएरे लोल ॥ पुर्वापर क्रम मान ॥ मा० ॥ धन० ॥

धन० ॥ ११ ॥ निरखी नंदिस्वर द्वीपने रे लोल ॥ शिव सुत केशवदास ॥ मा० ॥ उद्योतविजय उपकारथीरे लोल ॥ करतो कविता विलास ॥ मा० ॥ धन० ॥१२॥

दुहो.

उलट आणी अंगमां ॥ जयकोरबा जसवंत ॥ समोवसरण रचियुं सरस ॥ थावा शिव वधु कंत ॥ १ ॥

ढाल ६ ठी.

गोकुलनी गोवालणी मही वेचवा चाली ॥ ए देशी ॥

समोवसरण रचना रची ॥ सुणो सव नर नारी ॥ आरस काम छे ओपतुं

॥ मांहीं मेनाकारी ॥ १ ॥ रजत कोट पहेलो रच्यो ॥ करयां कनक कोसीसां ॥ कनक कोटने कांगरा ॥ रुडां रत्ननां दीस्यां ॥ २ ॥ रयण कोट रलीयामणो ॥ मणी कांगरा मुक्यां ॥ जयकोर बातो ब नावतां ॥ चतुराइ न चुक्यां ॥ ३ ॥ चार चार त्रण कोटना ॥ बार द्वार क रीने ॥ द्वार पाल देवी देवता ॥ हथिया र धरीने ॥ ४ ॥ पुष्करणी अम पेखी यों ॥ पहेले कोटनें द्वारे ॥ वाहन पहे ला कोटमां ॥ करयां शास्त्रानुसारें ॥ ५ ॥ पंखी पशु रुमा रंगना ॥ बीजे कोटे ब नाव्यां ॥ जीनवर वाणी बगेथी ॥ जा

णे सुणवाने आव्यां ॥ ६ ॥ चार नि
कायना देवता ॥ वली देवीयो दिपे ॥
नर नारी साधु साधवी ॥ साद्वादी समी
पे ॥ ७ ॥ बार परखदा प्रेमथी ॥ को
ट त्रीजें कहीजे ॥ मणी मय वेंदीका उ
परे ॥ सिहासन्न सुणीजे ॥ ८ ॥ चामर
अम सुर ढालता ॥ दिपतो देवछंदो ॥
रजत अशोक तरु थकी ॥ उपजे छे
आणंदो ॥ ९ ॥ चार सिहासन उपरे
॥ त्रिक छत्रनां चार ॥ भामंमल भलां
भालीयां ॥ तस तेज अपार ॥ १० ॥
रजत सोवन तणा रंगथी ॥ समोसरण
शोभावी ॥ धन्य रतन जयकार बा ॥

जननी कुख आवी ॥ ११ ॥ समोवसर
ण आवुं सुरने ॥ आवमे न आदरवुं ॥
पंचम कालमां मुकीयुं ॥ समोसरणने
करवुं ॥ १२ ॥ जयकोर बा तणी पुत्रि
का ॥ पुतली पुन्यशाली ॥ गोख प्रभु
पधरावबा ॥ करयो पाप प्रजाली ॥ १३
॥ उद्योत विजयोपकारथी ॥ शिव सुत
गुण गायें ॥ श्रोता सांभलवा थकी ॥ है
मे हर्ष न माये ॥ १४ ॥

दुहा.

चैत्य करयां दो चितथी ॥ अन्यो
अन्य समीप ॥ समोवसरण रचना सर
स ॥ श्री नंदीस्वर द्विप ॥ १ ॥ तेहमां

प्रभु पधराववा ॥ शुभ महुरत लेइ सार ॥ प्रतिष्ठा करवा भणी ॥ जल लावे निरधार ॥ २ ॥ मंत्री सरखा मुन्यम जे ॥ शेठ तणा हुंशियार ॥ सामग्री सवी सज करे ॥ विजुभाइ तेणी वार ॥ ३ ॥ बत्रिश साले माघ वद ॥ एकादशी रवीवार ॥ वरघोडो चडीयो वडो ॥ धाम धुमथी धार ॥ ४ ॥

ढाळ ७ मी.

मारो नाव्यो माडी जायो वीर ॥ मारुं मुघा मुलनुं ॥ ए देशी ॥

जल जात्रा वरघोडो हुं वरणवुं ॥ श्रोता श्रवण धरो धरी स्नेह ॥ धन धन

दहाडो धारीए ॥ इंद्र ध्वजनी ध्वजा फ
रके गगनमां ॥ सहु आगळ शोभतो ते
ह ॥ धन० ॥ धन्य धन्य साराभाइ शेठ
॥ धन धन दहाडो धारीए ॥ करयो
नवीन नंदिस्वर द्धिप ॥ सदा सुख का
रीए ॥ ॥ ए टेक ॥ ॥ १ ॥

गिरी जेवा जुगल गज आवीया ॥ उं
ची जातना अश्व अपार ॥ ध० ॥ सोना
रुपा थकी सणगारीया ॥ करे चाल
तां थेइ थेंइ कार ॥ ध० ध० क० ॥ २ ॥

रुपे शणगारे सावेला सोभता ॥ मा
नु अमर कुंवर अवतार ॥ ध० ॥ सुता
श्रावकनी सखपालमां ॥ दैव दीकरी जे

वो बेदार ॥ ध० ध० क० ॥ ३ ॥

कंइक मेने बगी बेठी मोजथी ॥ माता
ने जोइ मुख मलकाय ॥ ध० ॥ उभे र
स्ते भुतलना उपर भलो ॥ छंटकाव शि
तल जल थाय ॥ ध० ध० क० ॥ ४ ॥

आव्या असवार अश्व खेलावता ॥
डंको वागे फरुके निशान ॥ ध० ॥ रणशीं
गां वागे वली रंगमां ॥ आवी जाणे
जादव तणी जान ॥ ध० ध० क० ॥
५ ॥ पटा पेहेरी पोलीसनुं प्यादल घणुं
॥ हिंमे हरखे करी रुमी हार ॥ ध० ॥
सउ सरखो गति चाले गारदी ॥ समशेर
वालो सुबेदार ॥ ध० ध० क० ॥ ६ ॥

दमा रजत थही आव्या आरबो ॥ बाळ
ब्रम बम आरबी बोल ॥ ध० ॥ उंचा क
रमां जमझ्या तो झळकता ॥ कुदी ना
चीने करता कल्लोल ॥ ध० ध० क० ॥
७ ॥ उभे रस्ते जुए जन आवळी ॥ आ
खा नगरना हइयामां हुंश ॥ ध० ॥ भ
ली भेरी भुंगळ वळी वागती ॥ ढोल तां
सां तणी पम्हे धुंश ॥ ध० ध० क० ॥८॥
उतावळमां आंजी एक आंखमी ॥ पुंची
हाथनी पेहेरीनें पाय ॥ ध० ॥ नारी बारी
झरुखे ने जाळीए ॥ जोवा वरघोमो झ
मपथी जाय ॥ ध० ध० क० ॥ ए ॥
आवी कंपनीउ दोय कांपथी ॥ बुक वांची

वाजींत्र बजाय ॥ ध० ॥ बीजां वाजां वि
लायती वागतां ॥ मुख गणवा थकी न ग
णाय ॥ ध० ध० क० ॥ १० ॥ शरणाइ
कोयल पेरे टहुकती ॥ मीठा मंगल वा
जाना शब्द ॥ ध० ॥ इंद्र इंद्राणी आवी
आकाशमां ॥ वरघोडो जोवा रहे स्तब्ध
॥ ध० ध० क० ॥ ११ ॥ शोभा साजन
नी शी हुं वरणवुं ॥ मल्या श्रावक सक
समान ॥ ध० ॥ कंइक अत्तर चोलता अं
गमां ॥ कंइक चावता फोफल पान ॥ ध०
ध० क० १२ ॥ लीकमदास साजन मांही शोभ
ता ॥ समता रसमां झीलंता सुपात्र ॥ ध० ॥
नगीनदास साजन मांही निरखीया ॥ मो

तीभाइ तणा जे जमात्र ॥ ध० ध० क०
१३ ॥ पुस्प वमीयो सुंगे कंइक वेलमा ॥
वेंहेंचे माळी तोरा भरी वाब ॥ध०॥ हेते
गजरा घाली दोय हाथमां ॥ हैमे पेहे
रिया हार गुलाब ॥ ध० ध० क० १४
॥ नागर नगरशेठ ने नाणावटी ॥ रुमा
राजमां आबरुदार ॥ ध० ॥ मुंगे मरमी
मारग चाले मलपता ॥ हीरा मोती वणज
करनार ॥ ध० ध० क० १५ ॥ राजन
गर तणा व्यवहारिया ॥ आवी सकल
श्रावक हरखाय ॥ ध० ॥ लाख लश्कर
लेइ रुमी रीतथी ॥ मोह महिपति मारवा
जाय ॥ ध० ध० क० ॥ [illegible] रथमे

रथ रुमो कनकथी रजतनो ॥ कंचन क
लस उपर झलकार ॥ ध० ॥ चाले च
कनी रणझणी रणझणे ॥ जोमत्या जबरा वृ
षभ तेणी वार ॥ ध० ध० क० ॥ १७ ॥
नंदी शींगे सोवन खोलो शोभती ॥ झुल
जरकसी झाक झमाल ॥ ध० ॥ घाल्या
वृषभ वदन मोती मोरमा ॥ कंठे घमकती
घुघरमाल ॥ ध० ध० क० ॥ १८ ॥ रु
पे करन कुंवर सम फुटमा ॥ हाथे सांक
लां हीरे जमेल ॥ ध० ॥ मुक्ताफल मणी
मालाउ कंठमां ॥ माथे नवघरुं नंग भरे
ल ॥ ध० ध० क० ॥ १९ ॥ साराभाइ
बेया रथ सारथी ॥ ग्रही हाथमां रेशमी

रास ॥ ध० ॥ एवा रथ मांही जगपति रा
जता ॥ उर अवलोकी आव्यो उल्लास ॥
ध० ध० क० ॥ २० ॥ लघु भ्रात सारा
भाइ शेठना ॥ चमनलाल चंचल ने चा
तुर ॥ध. शोभे प्रभुजीना पाळल प्रेमथी ॥
सजी वस्त्राभुषण भरपुर ॥ ध. ध. क.
॥ २१ ॥ रुपा पालखीमां जीन जाणीए॥
बंने बाजुए चमर वींझाय ॥ ध. ॥ जय
जयकार बोले चोबदार त्यां ॥ स्नेहे श्रा
वक वीजणा वाय ॥ ध. ध. क. ॥ २२
॥ फरके नेजा ध्वजा जरीआननी ॥ झ
ण झणीयां झगे छे अपार ॥ ध. ॥ धारो
धप घटा गगनें गइ ॥ रुपा कळशे करे प

य धार ॥ ध. ध. क. ॥ २३ ॥ त्रण छत्र
धरे वितरागने ॥ आगे मंगल अम अभी
राम ॥ ध. ॥ देता देवतानें बलबाकला ॥
मुके श्रीफल देव मुकाम ॥ ध. ध. क. ॥
२४ ॥ बोले जाचक जन विरुदावली ॥
मुख गाए प्रभु गुण गान ॥ ध. ॥ पंच
शब्दां वाजीत्र त्यां वागतां ॥ शशी सवीता
मुखी सोहे साथ ॥ ध. ध. क. ॥ २५
॥ डफ ताल वीणा वली वागती ॥ वागे
घंट घुघर घडियाल ॥ ध. ॥ पगे तल
तेटलो मारग नव मले ॥ पिता पुत्रनी ले
न संभाल ॥ ध. ध. क. ॥ २६ ॥ उभा
थइने करे सउ वंदणा ॥ जीनराजने आ

वके सारे ॥ ध. ॥ एवो शोभाए वरघोमो संचरयो ॥ हठीभाइ तणी वामी मझार ॥ ध. ध. क. २७ ॥ धर्मनाथ पासा दमां आवीने ॥ पणमे श्रावक स्वामीने सार ॥ ध. ॥ बावन जीनालु देहरुं देखी तीहां ॥ आव्यो हैयामां हरख अपार ॥ ध. ध. क. ॥ २८ ॥ पधरावी प्रभु ओगमे तीहां ॥ स्नेह सहित भणावियुं स्नात्र ॥ ध. ॥ वागे ताल म्रदंग त्यां तालमां ॥ दे बे दान ते ले बे सुपात्र ॥ ध. ध. क. ॥ २९ ॥ मंगल भुषण पेहेरीने माननी ॥ वस्त्र बदली फरे बाला बाग ॥ ध. ॥ मरुवो मालति महमहे मोघरो ॥ ले बे सुम

न सुगंध सुहाग ॥ ध. ध. क. ॥ ३० ॥ सहकार तले ववी सुंदरी ॥ खोलामां ले इ धवरावे बाल ॥ ध. ॥ जमे बरफी बी राजीने बंगले ॥ कंइक तेजी कुदावे ते काल ॥ ध० ध० क० ॥ ३१ ॥ कवि ताते विधी बधी साचवी ॥ गुरु गमथी आ गम अनुसार ॥ ध० ॥ जल देवी जमा मीने जल तणा ॥ भरया कनकना कुंभ अपार ॥ ध० ध० क० ॥ ३२ ॥ कुंभ पान श्रीफलथी शोभाविया ॥ हीर वस्त्र बांधी वहु वेश ॥ ध० ॥ माथे लेइने चा ले नारी मलपति ॥ रुपे रंभाथी शोभे वि शेष ॥ ध० ध० क० ॥ ३३ ॥ रामणदी

वो उजळी वहुना हाथमां ॥ माथे मुक्यो मोती बणो म्होम॥ध०॥ मीठा स्वरथी मंगळ गाती माननी ॥ चाले गजगतीथी जोमा जोम ॥ ध० ध० क० ॥ ३४ ॥ जुगति वरघोडानी रुडी जोइने ॥ हरखे जयकोर वा जसवंत ॥ ध० ॥ अघावंत श्राविका सोहामणी ॥ लळी लळी प्रभु पय प्रणमंत ॥ ध० ध० क० ॥ ३५ ॥ उतर्यो वरघोडो जीन देहरे आविया ॥ कहे शिव सुत आणी उमंग ॥ ध० ॥ गुरु उद्योत विजय पसायथी॥साराभाइ शेठे राख्यो रंग ॥ ध० ध० क० ॥ ३६ ॥



दुहो.

जल लाव्या जुगति करी ॥ आणंद अंग न माय ॥ प्रभु भक्ति भावे करे ॥ भव तरवा उपाय ॥ १ ॥

ढाल ८ मी.

सांभलज्यो सजन नर नारी ॥ हेत शिखामण सारीजीरे ॥ ए देशी ॥

श्री परमेश्वर पुजा मांही ॥ दसविग स्नात्रिया सारा जीरे ॥ उछव चाले एठ ला दीन सुधी ॥ दुर करी छ दारा ॥ श्रोता सुणीएजीरे ॥ जीन उछव अधिकार ॥ श्रोता सुणीएजीरे ॥ भणतां जय जयकार ॥ श्रोता सुणीएजीरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

शुभ वाशित चुरण वपु चोळी ॥ चोळी चंदन बेळजीरे ॥ उगी सवारमां उष्ण उदकथी ॥ स्नान करे गुण वेळ ॥ श्रोता० ॥ २ ॥ अंबर मंत्री अंगे पेहेरे ॥ केसर तीलक करताजीरे ॥ करमां कनकनां सांकळां कळी ॥ उतरास ण सउ धरता ॥ श्रोता० ॥ ३ ॥ सोवन चोकमां श्रवणे सोहे ॥ मांही मनोहर मोतीजीरे ॥ मुक्ताफळ माळा उर ओपे ॥ जस जळ हळती जोति ॥ श्रोता० ॥ ४ ॥ कंदोरा कंचनना कटिए ॥ वेढ वींटी आंगळीएजीरे ॥ पुजंता प्रभु आभुषण सजी ॥ दुख दोहग

मे वधोए ॥ श्रोता० ॥ ५ ॥ स्नात्र भणावी जग स्वामीनुं ॥ कुंभ थीर मन थी थाप्योजीरे ॥ अखंड घृत दिपक तिहां दिपे ॥ जय जयकारज वाप्यो ॥ श्रोता० ॥ ६ ॥ दधी केसर साकर जल घृत पय ॥ पंचामृतथी प्रीतजीरे ॥ कनक रजतना कलस भरीने ॥ नवरावे जीन निते ॥ श्रोता० ॥ ७ ॥ शुद्ध श्वेत अंबरथी जीन वपु ॥ लुंछी ललित स्वभावेजीरे ॥ धुप दशांग उखेवी आगल ॥ नाथने शिर नमावे ॥ श्रोता० ॥ ८ ॥ अगमर केसर कनक कचोला ॥ भाव धरीने भरीनेजीरे ॥ जीन पद

पुजी पुस्प चढावे ॥ उल्लट उर धरीने ॥
श्रोता० ॥ ए ॥ दिप नैवेद तंदुल ने
फल थकी ॥ अष्ट प्रकारे प्रभु पुज्याजी
रे ॥ भाव स्तव करी भावना भावतां ॥
चार घुतारा धुज्या ॥ श्रोता० ॥ १० ॥
स्नात्र भणावी खटरस भोजन ॥ जुग
ती करीने जमावेजीरे ॥ भगती स्वामी
भाइनी करतां ॥ पुन्य घणेरुं पावे ॥ श्रो
ता० ॥ ११ ॥ उद्योत विजय गुरु च
रण पसाए ॥ शिव सुत जीन गुण गाए
जीरे ॥ भवी सांभलजो भाव धरीने ॥
आगल वात शी थाय ॥ श्रोता० १२ ॥



ढाळ ए मी.

सिधाचल शिखरे दीवोरे ॥ आदेसर अलवेलो बे ॥ ए देशी ॥

नित्य नाथने सीस नमावेरे ॥ भाव ध री भवि लोक सुणो ॥ ए आंकणी ॥

भगतिए स्नात्र भणावेरे ॥ भा० मांम वमो मनोहर बनियोरे ॥ भा० चोके बां धी चंदनियोरे ॥ भाव० ॥ १ ॥ रज नीए सजनी आवेरे ॥ भा० प्रमदा प्रभु गुण गण गावेरे ॥ भा० शणगार सज्या सुकुमारीरे ॥ भा० रुपे रंभाउ हारीरे ॥ भाव० ॥ २ ॥ केइ शशी वदनी मृग नेणीरे ॥ भा० शिश शेष सरीखी वेणीरे

॥ भा० ॥ गुणवंती गज गती चालेरे ॥ भा० मनमां मलकाती म्हालेरे ॥ भाव० ॥ ३ ॥ झांझर झणवट पग झमकेरे ॥ भा० घुघर वागे पग ठमकेरे ॥ भा० चपला सम चुनी चलकेरे ॥ भा० कान बे झालो झलकेरे ॥ भाव० ॥ ४ ॥ सीर केंस गुंथावी आवीरे ॥ भा० सेंथे शिंदुर शोभावीरे ॥ भा० अलबेली बनी बहु बालारे ॥ भा० कंठे मुगताफल मालारे ॥ भाव० ॥ ५ ॥ चक्षुमां काजल सारीरे ॥ भा० मानुं उरवसी अवतारीरे ॥ भा० कसबी सानी सजी सारीरे ॥ भा० नंदिस्वर नमती नारीरे ॥

भाव० ॥ ६ ॥ चमचा प्याला चीना
इरे ॥ भा० दर्पण दे छे हरखाइरे ॥ भा.
नित्य स्नेहे सांज सवारेरे ॥ भा० परभा
वना विविध प्रकारेरे ॥ भाव० ॥ ७ ॥
गुह नंदाव्रत पुजीजेरे ॥ भा० ध्वज क
लस पुजन पण कीजेरे ॥ भा० म्रदं
ग सरोदा बजावेरे ॥ भा० भोजक जीन
वर गुण गावेरे ॥ भाव० ॥ ८ ॥ भ
री ज्ञान गुलालनी झोरीरे ॥ भा० खे
ले हरखीने होरीरे ॥ भा० उद्योत विज
यजी पसाएरे ॥ भा० शिव सुत केसव गु
ण गाएरे ॥ भाव० ॥ ए ॥



ढाळ १० मी.

एम केइ सिद्धि वरया मुनीराया ॥ ...मथी निर्मल कायारें ॥ ए तिरथ ता रु ॥ ए देशी ॥

पम्हवे राते ने बीज प्रभाते ॥ खुब वि धी करे खांतेरे ॥ वितरागने वंदो ॥ ए टेक ॥ सामैयानी सामग्री सजता ॥ भावे ...तने भजतारे ॥ वि० ॥ १ ॥ जगपति ...गगुरु तम्हवा जाए ॥ हैमे हरख न मा ...रे ॥ वि० ॥ प्रभु पद भेटणुं मुकीने भा वे ॥ मुगताफलथी वधावेरे ॥ वि० ॥ २ ॥ त्रिभुवन स्वामी शेवकने तारो ॥ नवि ...न प्रासादे पधारोरे ॥ वि० ॥ रजत थाल

एम कह्ही पधरावे ॥ रोम रोम विकसावेरे ॥ वि० ३ ॥ स्वस्तिक दर्पण संपुट श्रीवछ ॥ कलस जुगल स्वछ मछरे ॥ वि० ॥ भ द्राशण नंदाव्रत भावे ॥ रजत थाल चित रावेरें ॥ वि० ॥ ४ ॥ चोखे चितथी चों खा थकी पुरीयां ॥ (अष्ट) मंगल आग ल करीयांरे ॥ वि० ॥ चित हरखी दोय चामर विंजे ॥ शीरपर छत्र धरीजेरें ॥ वि० ॥ ५ ॥ नर एक आगल वज्र उला ले ॥ नाथनें नेहे निहालेरे ॥ वि० ॥ चो बदार चाले जय जय करत॥ ध्वज जरी याननी धरतारे ॥ वि० ॥ ६ ॥ जाचक जन बिरुदावली बोलें ॥ म्हारे न को मभ

तोळेरे ॥ वि० ॥ मनहर माणक दिपक कीधो ॥ उजळीए ल्हावो लीधोरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ नबरावळ करी दानज दे छे ॥ नाथने नेहे नमे छेरे ॥ वि० ॥ उद्योतविजय गुरु चरण पसाए ॥ शिव सुत जीन गुण गाएरे ॥ वि० ॥ ८ ॥

ढाळ ११ मी.

हवे सक्र सुगोष वजावे ॥ ए देशी ॥

शिश कुंभ लेइने कुमारी ॥ सामी कंन्या मळी मनोहारी ॥ सामइयुं सजी घणुं सारुं ॥ लाव्या भुवनमां भवजळ तारुरे ॥ आज आंगणे सुरतरु फळीयो ॥ मन मोहननाथजी मळियोरे ॥ आज० ॥

ए टेक ॥ १ ॥ शिवशंकर जोशी सुजाणे ॥ आप्युं महुरत शास्त्र प्रमाणे ॥ विद्वान तिहां वण बाधे ॥ घटी मुकीने महुरत साधेरे ॥ आज० ॥ २ ॥ सुहासण सुंदरी आवे ॥ मोती सोवन फुलथी वधावे ॥ साद्वादिनुं स्नात्र भणावी ॥ नाथनी आरती उतरावीरे ॥ आज० ॥ ३ ॥ लाव्या स्वामी गभारा सामा ॥ परमाणंद सौ जन पाम्या ॥ साराभाइनी सुंदरी सारी ॥ शणगारे वपु शणगारीरे ॥ आज० ॥ ४ ॥ घाल्यो गोफणो चोटले चाक ॥ पगे तोमा वाली पहेरी नाक ॥ रुप वादमां रंभा हरावे ॥ उजली वहु पुंखवा आवेरे ॥

आज० ॥ ५ ॥ आवी अलबेली रमझम
करती ॥ कंठे कसुंबल घाटडी धरती ॥
मदन फल बांहे बंधावे ॥ कंकु चांदले
चोखा चोढावेरे ॥ आज० ॥ ६ ॥
धुंसरुं घाटडी थकी ढांकी॥मुसले पुंखती
वली वांकी ॥ रवैयो ने त्राकथी रंगे ॥
पुंखे इंद्रनो इंद्र उमंगेरे ॥ आज० ॥ ७ ॥
झंझि पिंडी सरइया उतारी ॥ प्रभु पुंखती
शेठनी नारी ॥ देवताने जइने नुतरीया
॥ सावधान सकल जन कारियारे ॥ आ
ज० ॥ ८ ॥ नाम सास्वता सुत्र वचन
॥ रीखभानन चंद्रानन ॥ वारीखेण वली
वर्धमान ॥ चार नामे चोमख भगवानरे

॥ आज० ॥ ९ ॥ बावन गिरी उपर पी
तें ॥ लाव्या बावन चोमख चिते ॥ चा
र चोमख श्रावक जन्न ॥ मेरुई लावियां
धरी मन्नरें ॥ आज० ॥ १० ॥ साराभा
इने श्रीकमदास ॥ चमनलाल नगीन गुण
रास ॥ उना पुरव कर्म खपावा ॥ अं
जनगीरी प्रभु पधरावारे ॥ आज० ॥
११ ॥ जयकोरबा उलट आणी ॥ यही
चंद्र प्रभु निज पाणी ॥ पधरावा हृदय थ
इ राजी ॥ समोसरणना आग उमांजीरे॥
आज० ॥ १२॥एम श्रावक प्रभु पधरावा
॥ कंइक जीनवरना गुण गावा ॥ शिवशं
करने कहे भाली ॥ वाजे महुरतनी क्या

रे थालीरे ॥ आज० ॥ १३ ॥ रहे श्रा
वक सहु मुनपणे॥ शिवराम मंत्राक्षर भणे ॥
भुज भुवन नंद चंद भणीए ॥ विक्रमनो
संवत्सर गणीएरे ॥ आज० ॥ १४ ॥
फागण सुद बीज कहीजे ॥ समे लग्न ने
बीज गणीजे ॥ उभा रक्ष रुमों रवीवार ॥
शुभ योग तीहां नीरधाररे ॥ आज० ॥
१५॥ घटी बार ने पल एकत्रीसे॥ वृष ल
ग्न अति शुभ दिसे ॥ मिथुन नव मांक्ष छे
जेमां ॥ शुभ स्थानक छे ग्रह एमांरे ॥
आज० ॥ १६ ॥ कुंमली वृष लग्ननी
कीजे ॥ केतु पांचमे स्थान भणीजे ॥ मु
मी नीधि गणो गुरु बुध ॥ दशमें शनी सु

रज सुधारे ॥ आज० ॥ १७ ॥ शशि
शुक्र राहु लाभ गाजे ॥ भोम बारमे शा
स्त्र समाजे ॥ आव्यो लग्न समय बलवा
न ॥ स्थाप्या गादीए श्री भगवानरे ॥
आज० ॥ १८ ॥ सोना कलस ध्वजा
मनोहारी ॥ मंगल घरनो कारभारी ॥
सांकलचंद आनंद लावे ॥ चित आणी
ने सिखर चढावेरे ॥ आज० ॥ १९ ॥
मुनी भुत नयन भणो आजे ॥ बींब एट
ला गादी बिराजे ॥ श्रावक मन हर्ष न
मावे ॥ सोना रुपाना पुस्पे वधावेरे ॥
आज० ॥ २० ॥ शोभे गादीए त्रीजग
राणा ॥ करे श्रावक सहु नजराणा ॥ वा

गे हर्षनी थाळी ने ताळी ॥ दीळ दीवमी कोम्ह दीवाळीरे ॥ आज० ॥ २१ ॥ मृदंग वीणा कम्हताळ ॥ वागे घंट घुघर घम्हीयाळ ॥ आवे गणतां थकां नव पार ॥ हुवा वाजींत्र शब्द अपारेंर ॥ आज० ॥ २२ ॥ सोभाग्य विजयजी सवाइ ॥ जस किरति घणी जग मांइ ॥ सर्व दरशननो जाणे सार ॥ दयावंत दीसे छे अपारेरे ॥ आज० ॥ २३ ॥ महा भाक्मवंत पंन्यास ॥ रुम्हा रत्न विजय गुण रास ॥ वासखेप करे मन आणी ॥ मीठी जेनी सुधा सम वाणीरे ॥ आज० ॥ २४ ॥ मणी विजय मणी सम दिपे ॥ जेना संज

मथी को न जीपे ॥ एशी वरश अवस्था धरता ॥ चोविहारां एकासणां करतारे ॥ आज० ॥ २५ ॥ दया विमळजी दी लना उदार ॥ वळी हरख विजय हुशी यार ॥ तप गच्छ चोमासी आवे ॥ करे वास खेप भले भावेरे ॥ आज० ॥ २६ ॥ दीधा कंकु छडा घेर घेर ॥ टोंगे तरीया तोरण लीला लेहेर ॥ शेठ साराभाइ भ ले भावे ॥ नवकारसी नेहे जमावेरे ॥ आज० ॥ २७ ॥ सीरपाव करे पछी स हुने ॥ शेठ सुखीया कन्या जन बहुने ॥ अलंकारने उमदा पोशाग ॥ आपे- कंइ ने कसुंबल पाघरे ॥ आज० ॥ २ ॥

उतरी आरत। मंगळ दीवा ॥ शेठ साराभा

इ चीरंजीवो ॥ गुरु उद्योत विजय पसाए

॥ गुण शिव सुत केशव गाएरे ॥ आज०

॥ १ए ॥

दुहो.

कर जोमी जीनराजने ॥ ते तक चीकम

दास ॥ विनय धरीने विनवे ॥ उर धरि

अति उल्लास ॥ १ ॥

अंतर लापीका हरीगीत छंद.

श्रीपती अती मती शुद्ध आणी ध्यान

धरता तुज तणुं ॥

साद्धाद्वि संकर सीर नामी विनयथी वि

नवे घणुं ॥

राज आ चउदश लोकमां तुं श्रेष्ट छे
जीन सौ थकी ॥
भानुं शशी हरी चरण शेवी नमन क
रता नित्य नकी ॥ १ ॥
इच्छित फल शुभ आपवा अरीहंत कं
त महंत छे ॥
शेहरो छे सौ देव शीर गुणवंत जीन
जी अनंत छे ॥
वरवा अविचल गाम तुजने अरज अ
नुचर उचरे ॥
नेकज मने तुज भक्तिनो तें दील थ
की नव विसरे ॥ २ ॥
हे देव केरा देव तुज पदवी मनें करु

णा करी ॥

सुण साहिबा शेवक तणी प्रज्ञप्ति पुरण

प्रीत धरी ॥

स्ववराज्य मुक्ति फल मने प्रभु अचल

सुखडुं आपजे ॥

सामुं नीहालो नाथजी शेवक तणा दु

ख कापजे ॥ ३ ॥

सरदार अमने तार पार उतार आ सं

सारथी ॥

नव आवीए भव मांही भमवा अज अ

मर आधारथी ॥

देजो मनें तुज चरण शेवा अवर देव

न जाचीए ॥

वश करी श्री वित्तरागने आम रुदय मां
हो राचीए ॥ ४ ॥

नंदिस्वरा तुज नमन करीए उलट ध
रीए अंगमां ॥
दील भरी वार हजार दीनमां नाम रटी
ए रंगमां ॥
स्वर सात उलट सुघट करी तुज गुण
अहनिश गावतां ॥
रज रहे नही भव तणी भीती प्रभु छंद
बनावतां ॥ ५ ॥

जीभ मुज तणी पावन करुं जीनराज
ना गुण गाइने ॥
नर इंद्रने सुरंइद्र पण सुख लहे तुजने

ध्याइने ॥
रावण अने वली राम त पण गुण गा
ता ताहरा ॥
जसवंत जगमां जगपति जय जय क
रोने जीनवरा ॥ ६ ॥
निश्चे करी तुज नामनो विश्राम सउने
नाथजी ॥
सरधा थकी पद प्रणमुं प्रीते ग्रहो हेतु
हाथजी ॥
दातार शिव वधु दान द्यो तुज चरण
जाचक जाणीने ॥
कर म्हेर लीला ल्हेर शेवक घेर वात
प्रमाणीने ॥ ७ ॥

रंजु न अवर अमर थकी जगराय भ
क्ति राचीए ॥
तारो त्रिभुवन ताय मुज तुज चरण शेवा
साचीए ॥
शेवक तणी कर साह्य तुज गुण गाय श्री
कमदासजी ॥
वालि शिव सुत केशव सदा मागे अविच
ल वासजी ॥ ८ ॥

आ उपरना छंदना दरेक चरणना पेहेला अक्षरो वांचतां नीचे प्रमाणे दोहरो वंचाय छे ॥

दुहो.

श्री साराभाइ शेठने ॥ दें सुख सास

न देव ॥ नंदिस्वर जीन राजनी ॥ सदा करंता शेव ॥ १ ॥

टोटक छंद.

प्रणमुं पद पंकज प्रीत धरी ॥ जळ चंदन फुलथी शेव करी ॥ जीनजी गुण गायन आदरीए ॥ गरीए न कदी दरीए तरीए ॥ १ ॥ भवनी अटवी भमतां खम तां ॥ दुख नाठुं प्रभु तुजने नमतां ॥ जग नायक दायक मुगतिनो ॥ करनार प्रभु दुर कुगतिनो ॥ २ ॥ कर किंकरनो पकमी शिव दे ॥ कर जोमी अपादनेज वदे ॥ भवतारण तुं भगवंत भलो ॥ तुं निगोद निवारण नाथ मलो ॥ ३ ॥ हितका

री हिरो हम हाथ चमक्यो ॥ परमेश्वर पा
लव में पकड्यो ॥ नव छोडुं कदी छबि
ला करथी ॥ मरिए नही कर्म तणा मर
थी ॥ ४ ॥ करजो करुणा हरजो दुख
डुं ॥ मन मोहन स्वामी करो सुखडुं ॥
जयकोर कहे तम द्यो पदवी ॥ कविता
करतो शिव पुत्र कवि ॥ ५ ॥

दुहो.

जमी ज्यावी जुगती करी ॥ सामी वछ
ल सार ॥ ताळी टोळे मली ॥ वदती
मुख ते वार ॥ १ ॥

ढाल. १२

पमवेनी पण प्रीत घत मत भुलीरे ॥

ए दशी ॥

चालो चालो सैयर मुज साथ जी
न मुख जोवारे ॥ निरखी नंदिस्वर नाथ
पातिक धोवारे ॥ चा० १ ॥ त्रेपन गिरी
वर गुणवंत ॥ चउ मुख छपन्नरे ॥ जोयुं
जीनवर तेज अनंत ॥ दीन मुज धन्न ध
न्नरे ॥ चा० २ ॥ जइए जीन वंदन का
ज ॥ ललना लटकेरे ॥ मोहि मोहि मो
हन महराज ॥ मुखने मटकेरे ॥ चा०
३ ॥ भव भय भंजन छे देव ॥ शिव सु
ख दातारे ॥ जस सुरपति सारे शेव ॥ त्रि
भुवन त्रातारे ॥ चा० ४ ॥ विनवीए वि
नता वृंद ॥ अमर सुख आपोरे ॥ मुख

सरद पुनमनो चंद ॥ संकट कापोरे ॥
चा० ५ ॥ कुंमल कंचनना कान ॥ मुग
ट माथेरे ॥ परणावो श्री भगवान ॥ शि
व वहु साथेरे ॥ चा० ६ ॥ देइ दरिशण
देव दयाल ॥ भव जल तारोरे ॥ आ
जनम मरण जंजाल ॥ नरक निवारोरे
॥ चा० ७ ॥ छोमीने छमो छेल ॥ न
ही छेतराउरे ॥ मुकीने मननो मेल ॥ तु
ज गुण गाउंरे ॥ चा० ८ ॥ अरजी उ
द्योत पसाय ॥ श्रवणे धरजोरे ॥ नमे शि
व सुत केशव पाय ॥ करुणा करजोरे ॥
चा० ९ ॥



ढाल. १३

विर कहे गौतम सुणो ॥ ए देशी ॥

एक दिन ऋीकमदासने ॥ भाणाभाइ तणी नारीजी ॥ आधार बहु सुख आच री ॥ वाणी वखत विचारीजी ॥ ससरा पीता सम सांभलो ॥ आंकणी ॥ १ ॥

आ संसार असार छे ॥ नथी सार लगारजी ॥ वस्तु अथीर अवलोकीने ॥ मुजने आवे धिक्कारजी ॥ स० २ ॥ केनां मंदिर केनां मालीयां ॥ केनुं तन धन मालजी ॥ छेक्क जुलमथी छमावीने ॥ कां मे पकमशे कालजी ॥ स० ३ ॥ लछीए अगणीत लोकने ॥ भव जल मांही बु

माम्याजी ॥ दुर्लभ मनुष जनम थकी ॥ ठेली नरकमां पाम्याजी ॥ स० ४ ॥ जल जुलमे जर जाय छे ॥ कांतो लुट नारा लुटेजी ॥ धरम मारग कामी खरच तां ॥ छाती मुरख कुटेजी ॥ स० ५ ॥ भस्म करे अग्नि कदि ॥ चोली चक्षु रहेवायजी ॥ दया थकी नीज द्रव्यने ॥ भावे नही व वरायजी ॥ स० ६ ॥ केनो पीयु केनी प्रे मदा ॥ केनां पुत्रीने पुत्रजी ॥ अंत समय जावुं एकलुं ॥ मुकीने घर सुत्रजी ॥ स० ७ ॥ भगनीने भाइ भोजाइओ ॥ मामा मातने तातजी ॥ स्वारथ कारण सौ मल्यां ॥ करे स्वारथनी वातजी ॥ स० ७ ॥ हा

कम हुकम चलावतां ॥ मनमां धरी मान
जी ॥ वांक वगर दीन दमता ॥ सुता ज
इ समसानजी ॥ स० ९ ॥ धवल शेठ
धनवंतने ॥ पुत्रने परीवारजी ॥ पण कर
मे पम्यो सातमी ॥ माठी नरक मझार
जी ॥ स० १० ॥ जंबु जुओ जुवती त
जी ॥ मुगति वधुने वरियाजी ॥ शास्त्र
विषे जीन धर्मथी ॥ कंइ भव जलधिने
तरीयाजी ॥ स० ११ ॥ धिक धिक आ
संसारने ॥ साधोने श्री जीन धर्मजी ॥ पु
न्य मारग धन वावरो ॥ जेथी खपे आम
कर्मजी ॥ स० १२ ॥ धन धन मामाजी
माहरा ॥ जेणे धन घणां खरच्यांजी ॥

नाम अमर थयुं अवनीमां ॥ कविए चरी
त्रज चरच्यांजी ॥ स० १३ ॥ अष्टापद
जी नंदिस्वरे ॥ हुं गइ दरशन करवाजी
॥ जीनमुख मुंद्राने जोइने ॥ लाग्यां पा
तिक झरवाजी ॥ स० १४ ॥ अष्टापद
जी आगारमां ॥ विर रीखभदेव सामा
जी ॥ कर जोडी उभा गोखमां ॥ मारां
भामीजी मामाजी ॥ स० १५ ॥ समोवस
रण सामे शोभतां ॥ माशीजी नणंद निहा
लीजी ॥ रोम रोम विकसित थयां ॥ प्रभु
मुख शशी सम भाळीजी ॥स०१६॥ शांती
जीनेस्वर सोळमा ॥ वंदीया मुज्ञ दरवा
जेजी ॥ तस कने हीर सुरी तणी ॥ मुरति

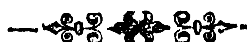
मनोहर राजेजी ॥ स० १७ ॥ सत्यविज
य पंन्यासथी ॥ शोभाग्य विजय पंन्यास
जी ॥ एटली पेढीनी पादुका ॥ दरवाजे
देखी उल्लासजी ॥ स० १८ ॥ संसार सा
गर रुदयमां ॥ लाग्यो खचीत मने खारो
जी ॥ रीखभ चरण रंग लागीयो ॥ चो
ळ मजीठनो मारोजी ॥ स० १९ ॥ माटे
रीखभ जीन राजनी ॥ पादुका पधरावो
जी ॥ अष्टापदमां उत्तर दिशे ॥ रायण रु
मी रोपावोजी ॥ स० २० ॥ चरण कम
ल जीन राजना ॥ नित्य नित्य वंदन करी
एजी ॥ प्रभु पगलांनी पाछल अमे ॥ फे
रा नवाणुं फरीएजी ॥ स० २१ ॥ श्रीक

मदास ते सांभळी ॥ बोल्या वदने वचन
जी ॥ तें मारु कुळ अजवाळीयुं ॥ पुत्र
वधु धन धनजी ॥ लाग्यां वचन मने सी
तमां ॥ हवे ए आंकणी॥२२॥ गुणवती सु
त सुंदरी ॥ मारे पुत्री समानजी ॥ चरण
कमल जीन राजना ॥ शेवो करी सनमा
नजी ॥ला० २३ ॥ जेवी इच्छा मुज म
न हती ॥ तेवी इच्छा थइ ताहरीजी ॥ पा
दुका बनशे प्रासादमां ॥ सौने ए सुखका
रीजी ॥ ला० २४ ॥ नवीन नंदिस्वर द्वि
पमां ॥ दरवाजा तणी पासेजी ॥ देरी थ
शे घणी दिपति ॥ रायण त्यांतो शोभाशेजी
॥ ला० २५ ॥ ज्योतविजय पसायथी॥

सिधाचल सम घाटजी ॥ करशे शिव सु
हरखशे ॥ जोइ जिन पगलांनो गावजी
॥ ला० २६ ॥

दुहा.

पंच ज्ञान नव पद तणुं ॥ उजमणुं मन रंग ॥ नंदिस्वरमां मांमियुं ॥ उलट आणी अंग ॥ १ ॥ ए वरणवतां वदनथी ॥ बने ग्रंथ विस्तार ॥ शास्त्र विधीथी पामजो ॥ उजमणानो पार ॥ २ ॥ अगाइ उछव आदरी ॥ पुजा विविध प्रकार ॥ नित्य भणावे भावथी ॥ आणी उलट अपार ॥ ३ ॥



ढाल. १४

जेम जेम ए गिरी भेटीएरे ॥ ए दशी॥

संघ चतुर विधी सांभलोरे ॥ अठाइ उछ
व ठाठ ॥ सलुणा ॥ जीनवर प्रतिमा पुज
तारे ॥ शिव वधु वरवाने माट ॥ स० १
॥ प्रेमे प्रभु पधरावीयारे ॥ रजतना त्रीग
डां मांय ॥ स० ॥ विविध भेदे प्रभु पुज
तांरे ॥ दुखने दालीद्र दलाय ॥ स० ॥
२ ॥ संध्याए श्रावक सौ मलीरे ॥ कांसी
म्रदंग बजाय ॥ स० ॥ मधुर स्वरे जीनरा
जनारे॥ रागणीमां गुण गाय ॥ स० ३ ॥
मुगतीमाला मलवा भणीरे ॥ पहेरीने मंग
ल माल ॥ स० ॥ आरति अरिहानी क

रेरे ॥ जीव दया प्रतिपाल ॥ स० ॥ ४
॥ मंडपमां मली माननीरे ॥ नंदिस्वर गुण
गाय ॥ स० ॥ राग मनोहर रुपथीरे ॥
कोकिल रंभा हराय ॥ स० ५ ॥ सोना
कटोरी ने फुलथीरे ॥ केलवी नीज चतुरा
इ ॥ स० ॥ आंगी मसे शिव सुंदरीने ॥
पत्र लखे हरखाइ ॥ स० ६ ॥ कनक कुं
डल प्रभु कानमांरे ॥ मणी माणकथी भरे
ल ॥ स० ॥ पाना लीलम पुखराजनोरे ॥
मस्तक मुगट भरेल ॥ स० ७ ॥ रयण टी
का भला भालमांरे ॥ कंठे मोती तणी मा
ल ॥ स० ॥ भामंडल सीर पाछलेरे ॥ त
खते दिपंता दयाल ॥ स० ८ ॥ पंकज पां

खमी आंखमीरे ॥ लाजी गया जल मछ ॥ स० ॥ वदन शितल शशी हारीयांरे ॥ शाम थयो मटी स्वछ ॥ स० ९ ॥ लंके कटी सिंह लाजीनेरे ॥ मांभयो रखमवाने रान ॥ स० ॥ तेज जोई जग तातनुंरे॥ भमतो अहोनिश भान ॥ स० १० ॥ उद्योत विजय पसायथीरे ॥ पभणी चौदमी ढाल ॥ म० ॥ शिव सुत केशवजी कहेरे ॥ सौ घेर मंगल माल ॥ स० ११ ॥

ढाल. १५

रंग रशिया रंग रस बन्यो मन मोहनजी ॥ ए देशी ॥ श्रीगमे त्रिभुवन पति व न्या जीन जयकारी ॥ वली शिधचक्र स

खकार॥ तुं जगजीवन छे जीन जयकारी॥
ए आंकणी ॥ परम प्रभु परमातमा ॥ जी०
॥ पुजिजे विविध प्रकार ॥ तुं० १ ॥ नि
र्मल जल दधी दुधथी॥ जी० ॥ सुद्ध सा
कर केसर साथ ॥ तुं०॥ कनक तणा क
लसा भरी ॥ जी० ॥ नवरावे श्री जगना
थ ॥ तुं० २ ॥ अंग वस्त्र उजल ग्रही ॥
जी० ॥ लुंछीने स्वामी शरीर ॥ तुं० ॥
जीन वंदे जुगति करी ॥ जी० ॥ थापीने
मनडुं थीर ॥ तुं० ३ ॥ म्रगमद केसर अं
बरें ॥ जी० ॥ बहुल सुगंधी बरास ॥ तुं०
॥ कनक कचोली भरी विभु ॥ जी० पु
जे सौ जीन गुण रास ॥ तुं० ४ ॥ मरुउ

मोघर माळती ॥ जी० ॥ चंपकने वेळी विशाळ ॥ तुं० ॥ जाइ जुइ जासुळ थकी ॥ जी० ॥ पुजे प्रभु परम दयाळ ॥ तुं० ५ ॥ वास चुवोने माळथी ॥ जी० ॥ अष्ट मंगळ धृत दीप ॥ तुं० ॥ धुप धरी तंदुळ तणा ॥ जी० ॥ स्वस्तिक स्वामी समीप ॥ तुं० ६ ॥ ध्वज चामर छत्रादिके ॥ जी० ॥ पुजे सौ सक्र समान ॥ तुं० ॥ मौळी दर्पण दिपते ॥ जी० ॥ पुजे जन पुन्य निधान ॥ तुं० ७ ॥ नैवेद उत्तम फळ थकी ॥ जी० ॥ गीत नाटकने वाजींत्र ॥ तुं० ॥ पुरशोतम पदपुजीनें ॥ जी० ॥ काप्यां अम कर्म विचित्र ॥ तुं० ८ ॥

गुण गातां गुणवंतना ॥ जी० ॥ सौ घर मंगल माल ॥ तुं० ॥ उद्योत विजय पसा यथी ॥ जी० ॥ शिव सुतनो भाव विशा ल ॥ तुं० ए ॥

ढाल. १६

श्री अनंत जीन शुं करो साहेलमीयां ॥ ए देशी ॥

समोवसरणमां स्नेहथी साहेलमीयां ॥ पुजे श्रीजीन चंद ॥ गुण वेलमीयां ॥ मधुर कंठथी माननी ॥ सा० ॥ पभणे पु जा अमंद ॥ गु० १ ॥ तेर तेर वस्तु थ की ॥ सा० ॥ सोल सजी शणगार ॥ ग० ॥ परमातम पद पुजती ॥ सा० ॥

हइए हरख अपार ॥ गु० २ ॥ अपछरा
सम सजी आवली ॥ सा० ॥ कनक क
लस यही हाथ ॥ गु० ॥ तिर्थोदक भरी भा
वशुं ॥ सा० ॥ न्हवरावे जगनाथ ॥ गु०
३ ॥ महमहतुम्रग मद भरी ॥ सा० ॥
कनक कचोली मांह ॥ गु० ॥ भाव ध
री भगवंतने ॥ सा० ॥ पुजे अधिक उ
छाह ॥ गु० ४ ॥ चरण जानु कर अंश
उररे ॥ सा० ॥ मनहर मस्तक भाल ॥
गु० ॥ कंठ रुदय उदर वली ॥ सा० ॥ वि
नता पुजे धरी व्हाल ॥ गु० ५ ॥ वास
थकी वितरागने ॥ सा० ॥ पुजे परमानं
द ॥ गु० ॥ पुश्प माला प्रभु कंठमां ॥

सा० ॥ आरोपे टळे भव फंद॥ गु० ६ ॥
दिपक प्रगटी प्रेमथी ॥ सा० ॥ पुजी श्री
तीन भुप ॥ गु० ॥ रजत धुप धाने धरे
॥ सा० ॥ सरस सुगंधी धुप ॥ गु० ७ ॥
कमळ बोलशीरी केतकी ॥ सा० ॥ चं
पो चंबेली अमुल्य ॥ गु० ॥ मरुओ मो
घर मालती ॥ सा० ॥ जाइ जुइ जासु
ल ॥ गु० ८ ॥ दमणो सदाने दाउदी ॥
सा० ॥ अखंम कुशुम सुगंध ॥ गु० ॥
पद पंकज प्रभु पुजतां ॥ सा० ॥ दुर ट
ळे दुख धंध ॥ गु० ९ ॥ अष्ट मंगळे प्र
भु पुजीया ॥ सा० ॥ अखंम अक्षत भरी
थाल ॥ गु० ॥ अरिहाने आगळ ठवे ॥

सा. ॥ विमलज भाव विशाल ॥ गु० १०
॥ आत्म स्वरुप निहालवा ॥ सा. ॥ दर्प
ण पुजा सार ॥ गु० ॥ पुज्य तणी पुजा थ
की ॥ सा. ॥ बांधे पुन्य अपार ॥ गु० ११
॥ घारी घेबर घुघरा घणा ॥ सा. ॥ मेसु
र मोतीचुर ॥ गु० ॥ खाजां ताजां खु
रमां ॥ सा. ॥ पाक पींमा भरपुर ॥ गु०
१२ ॥ गगन गलेफां गुंदवमां ॥ सा. ॥
केहेतां नव केहेवाय ॥ गु० ॥ निरवेदी था
वा भणी ॥ सा. ॥ नैवेद पुजा थाय ॥
गु० १३ ॥ रजत कनकनी ध्वजा धरे
॥ सा. ॥ फुमतमां फरकंत ॥ गु० ॥ प्र
मदा प्रभुजी पुजतां ॥ सा. ॥ जीन गुण

वदन वदंत ॥ गु० १४ ॥ श्रीफल शीता
फल शेलडी ॥ सा० ॥ बीजोरां बहु जा
त ॥ गु० ॥ अनास अखोडने एलची
॥ सा० ॥ ठवे फनस भली भात ॥ गु०
१५ ॥ उत्तम फल अरिहा कने ॥ सा० ॥
मुके उतम पद माट ॥ गु० ॥ उद्योत प
साए शिव सुतना ॥ सा० ॥ भागे भव उचा
ट ॥ गु० १६ ॥

कलस.

पास शंखेश्वरा सारकर शेवका ॥
देवका आवडी वार लागी ॥ ए देशी ॥

आज आणंद छे आज आणंद छे
॥ आज सोवन तणो सुरज उग्यो ॥ अ

धिक दीवस तणो मन मनोरथ घणो ॥

स्वामी गुण गावतां सर्व पुग्यो ॥ आ० १ ॥

नंदना वन्न तप गच्छमां सुरतरु ॥ विजय

धरणेंद्र सुरीश्वरुए ॥ तेहना राजमां गाइ

गुणवंत गुण ॥ आप रसनाज पावन क

रुंए ॥ आ० २ ॥ सींह सुरी तणा शिश्य

छे शोभता ॥ सत्यविजय तणा कपुर सु

णीए ॥ तास खीमा तणा जिनविजय जा

णीए ॥ उत्तम पद्मने रुप थुणीए ॥ आ०

३ ॥ किर्ति तस शिष्य उद्यात इंदु समा ॥

जगतनां जेह उद्योतकारी ॥ कुमती मत

कापवा शुद्ध मत थापवा ॥ हाथमां श्रुत श

मशेर धारी ॥ आ० ४ ॥ कष्ट करी दुष्ट

उत्सुत्र जे भाखता ॥ दाखता मोक्ष सिद्धा
इ केरो ॥ तेह मुरख तणा ममतनो मुनी
वरे ॥ खंमी खंमी करयो खुब खेरो ॥
आ. ॥ ५ ॥ एह अणगारना शिष्य शि
वराम जे ॥ श्रुत भण्या सारीने चरण शे
वा ॥ तास सुत दास केशव कविता करे
॥ गाइ गुण सास्वतु सुख लेवा ॥ आ.
॥ ६ ॥ भाग्यशाली भली दान गुण आ
गली ॥ सत्य शेठाणी हरकोर बाइ ॥
वतनी पाटण तणो तास आगारमां ॥ उ
बरयो एहनुं अन्न खाइ ॥ आ. ॥ ७ ॥
बाइ हरकोर ने मगनभाइ मली ॥ नवि
न करी नेहथी जैनशाला ॥ तेह शाला

विषे कवि पिता पासतो ॥ भावे प्रकरण भ
णे जैनवाला ॥ आ० ॥ ८ ॥ सुत बे
शोभता बाइ हरकोरना ॥ भोज नृप सम
उमाभाइ भणीए ॥ तेहनी साज्यथी हुं भ
ण्यो भावथी ॥ मुज पिता पास गुणवंत ग
णीए ॥ आ० ॥ ९ ॥ कर भुवन भगतो
शशी साल सुद जेष्टमां ॥ स्तवन में प्रेम
थी पुरण करीयुं ॥ सोल ढालो सरस रु
डी रीते रची ॥ हैडुं हरखे करी मुज भ
रीयुं ॥ आ० ॥ १० ॥ कांइ ओछुं अ
धिक उचरयो होउतो ॥ माफ ए माह
री भुल करज्यो ॥ दास केशव कहे सु
र सासन तणा ॥ संघना सर्वदा विघन

हरज्यो ॥ आ० ॥ ११ ॥



स्तवन.

चालो जैए लाल नंदीश्वर वर धीपे जीनजी जुहारवा ॥ जीन पुजो लाल काल अनादी दुषीत आतम तारवा ॥ मध्य जंबु थकी आठमे धीपे ॥ स्थापन सासय जीननुं दीपे ॥ जे पुजे ते मोह नृप जीपे ॥ चा० ॥ १ ॥ अंजनगीरी चउ चउ दीशी राजे ॥ प्रती अंजन चउ दधी मुख छाजे ॥ देखी अम अम रतीकर मोह लाजे ॥ चा० ॥ २ ॥ ईम सर्व शैल बावन सारा ॥ उपरि तस मंदीर चउबारा ॥ जीन चउमुख युत तेजोदारा ॥ चा० ॥ ३ ॥ कल्याणक अठाइ दीन

भावे ॥ तुटीक युत तावीष पती आवे ॥ करी महोत्सव प्रभुना गुण गावे ॥ चा० ॥ ४ ॥ ए तीरथ धाम वर्मो भाग्यो ॥ ठाणं ग जिवाभीगममां दाख्यो ॥ गणधारी वचने चीत राखो ॥ चा० ॥ ५ ॥ स्थापना तस राजनगरे थापे ॥ तेह पुन्यथी पाप करम कापे ॥ मगनभाइनो जस तेणे बहु व्यापे ॥ चा० ॥ ६ ॥ जीन उतम चरण पद्म रुपे ॥ मोही पुजे पुस्प चंदन धूपे ॥ न पर्मे कहे रत्न ते भव कुपे ॥ चालो जइए लाल नंदीश्वर वर धीपे जीनजी जुहार चा० ॥ ७ ॥



श्रीरस्तु शुभंभवस्तु